Coverages for farmers training program 2020-21

SI No.	Place	Event dates	No. of coverages received
1	Nagara kurnool District, Telangana	22/10/20	3
2	Baran District, Rajasthan	21/10/20	10
3	Chhatarpur District, Madhya Pradesh	19/10/20	3
4	Raigarh District, Chhattigarh	17/10/20	4

Nagara kurnool District Telangana (22/10/20)

1. Namasthe telangana

ఆరుతడి పంటలతో అధిక దిగుబడి

- శాస్త్రవేత్త విష్ణు బదభాగ్నే

లింగాల: ఆరుతడి పంటల సాగు రైతులకు లాభదాయకమని వ్యవసాయ శాస్త్రవేత్త విష్ణు బదభాగ్నే అన్నారు. గురువారం మండలంలోని అంబట్‌పల్లి గ్రామ శివారులో కుర్మయ్య పొలంలో కిసాన్ క్రాప్ ఫౌండేషన్ ఆధ్వర్యంలో సాగు చేసి ఆరుతడి వరి పంటను పరిశీలించి రైతులకు అవగాహన కల్పించారు. ఈ సందర్భంగా మాట్లాడుతూ వర్ష పాతం తక్కువగా ఉన్న ప్రాంతాల్లో తక్కువ నీటితో వరిని పండించవచ్చని రైతులకు సూచించారు. మడులు లేకుండా నేరుగా పొలంలో విత్తనాలు చల్లుకోవడానికి వీలుగా ఉంటుందన్నారు. దీనివల్ల పెట్టుబడి తక్కువగా ఉంటుందని ఈ ఫౌండేషన్ విడుదల చేసిన వరివంగడంతో పంటను సాగు చేసి అధిక దిగుబడిని సాధించవచ్చన్నారు. నీటితో పాటు శ్రమ ఆదా అవుతుందన్నారు. కార్యక్రమంలో సర్పంచ్ రవిశంకర్, సింగిల్ విండో వైస్ చైర్మన్ హన్మంతరెడ్డి, ఫౌండేషన్ అగ్రోనామిస్ట్ ఓంనాథ్, మండల వ్యవసాయాధికారి నాగార్జునరెడ్డి, ఉపసర్పంచ్ జనార్దన్, ఏఈవో శివానంద్, రైతు శ్రీనివాసులు పాల్గొన్నారు.

2. Sakshi Paper

సాంకేతిక పరిజ్ఞానాన్ని అందిపుచ్చుకోవాలి

క్షేత్ర ప్రదర్శన ద్వారా రైతులకు అవగాహన కల్పిస్తున్న ప్రతినిధులు

లింగాల (అచ్చంపేట): మారుతున్న కాలానికనుగుణంగా సాగులో కొత్త మెలకువలు పాటించి అధిక దిగుబడులు సాధించాలని కిసాన్ క్రాఫ్ట్ ఫౌండేషన్ శాస్త్రవేత్త విష్ణుబడ బాగి అన్నారు. కిసాన్ క్రాఫ్ట్ ఫౌండేషన్ ఆధ్వర్యంలో గురువారం మండలంలోని అంబట్‌పల్లి శివారులో ఓ పొలంలో తక్కువ నీటితో వరి పండించడంపై రైతులకు క్షేత్ర ప్రదర్శన, శిక్షణ ఇచ్చారు. ఈ సందర్భంగా ఆయన మాట్లాడుతూ తక్కువ నీటితో వరిని పండించే విధానంపై అవగాహన కల్పించారు. తక్కువ వర్షపాతం ఉన్న ప్రాంతాల్లో విత్తనాలను నేరుగా పొడి నేలలో వేసుకోవచ్చన్నారు. ఇలా చేస్తే తెగుళ్లు, చీడపీడలు తక్కువగా ఉంటాయన్నారు. ముఖ్యంగా నారుమడి, దమ్ము, నేలను చదును చేయడం లాంటి పనులు అవసరమన్నారు. ఇలా చేయడం వల్ల ఎకరాకు 18– 20 క్వింటాళ్ల దిగుబడి సాధించవచ్చన్నారు. కిసాన్ క్రాఫ్ట్ ఫౌండేషన్ వారు ఈ వరి వంగడాన్ని సృష్టించారన్నారు. అనంతరం కొత్త వరి వంగడంతో కుర్మయ్య అనే రైతు సాగు చేసిన పంటను క్షేత్ర ప్రదర్శన ద్వారా రైతులకు అవగాహన కల్పించారు. కార్యక్రమంలో సింగిల్ విండో చైర్మన్ హన్మంతురెడ్డి, ఏఓ నాగార్జునరెడ్డి, సర్పంచ్ నాగరవిశంకర్, ఉపసర్పంచ్ జనార్దన్, కంపెనీ డీలర్ శ్రీనివాసులు, అగ్రోనామిస్ట్ ఓంనాథ్, రైతులు పాల్గొన్నారు.

సాక్షి SAKSHI TELUGU DAILY
Fri, 23 October 2020
https://epaper.sakshi.com/c/55862428

3. Disha paper

ఆరుతడి సాగు రైతులకు మేలు..

- కిసాన్ క్రాఫ్ట్ శాస్త్రవేత్త విష్ణు

దిశ, అచ్చంపేట : ఆరుతడి పద్ధతిలో వరి పంట సాగు చేయడం వల్ల రైతులకు మేలు కలుగుతుందని కిసాన్ క్రాఫ్ట్ శాస్త్రవేత్త విష్ణు అన్నారు. నాగర్‌కర్నూల్ జిల్లా లింగాల మండల పరిధిలోని అంబటిపల్లి గ్రామంలో గురువారం రైతులతో అవగాహనా సదస్సు నిర్వహించారు. ఆరుతడి పద్ధతి ద్వారా రైతులకు ఖర్చు తగ్గడంతో పాటు పంట దిగుబడి అధికంగా వస్తుందని శాస్త్రవేత్త విష్ణు తెలిపారు. 50 శాతం నీరు ఆదా అవుతుందన్నారు. 100 నుంచి 120 రోజుల్లో దిగుబడి వస్తుందని తెలిపారు. ఇది మన్నికైన పద్ధతి అని నేషనల్ రీసెర్చ్ డెవలప్‌మెంట్ కార్పొరేషన్ (ఎన్ఆర్‌డీసీ) న్యూఢిల్లీ ద్వారా ఆమోదం పొందిందని గుర్తుచేశారు. ఈ కార్యక్రమంలో సింగిల్ విండో చైర్మన్ హనుమంతు రెడ్డి, ఉపసర్పంచ్ జనార్దన్, ఏఈఓ నరేందర్, రైతులు పాల్గొన్నారు.

ప్రతి కార్యకరకూ

23 October 2020
s://epaper.dishadaily.com/c/55862022

Baran District, Rajasthan (21/10/20)

1. Rajasthan Patrika

किसानों को कार्यशाला में दी जानकारी

धान की सीधी बुवाई से कम खर्च में अधिक मुनाफा

बारां में सीधी बुवाई वाले धान की खेती में किसानों को पानी की बचत करने की जानकारी देते विषय विशेषज्ञ। पत्रिका

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

बारां. राजस्थान के बारां जिले में अब किसान धान की सीधी बुवाई की फसल की खेती कर पानी की बचत करके कम लागत में भी फायदा उठा सकते हैं। सीधे बीज की बुवाई से अब किसानों की राह आसान होगी। इससे किसान 50 फीसदी कम पानी का उपयोग कर सकते हैं। इसके अलावा सीधी बुवाई को गेहूं, सोयाबीन की तरह धान भी सीधे बोया जा सकता है। यह विचार कृषि उपनिदेशक अतीश कुमार शर्मा ने बुधवार को बैंगलोर की किसान क्रॉफ्ट संस्था के अधिकारियों की मौजूदगी में बारां-मांगरोल रोड पर स्थित किसान जयनारायण हल्दिया के खेत में किसानों के लिएडीएसआर धान, सीधी बुवाई का प्रदर्शन कर कार्यशाला केआयोजन में व्यक्त किए। उन्होंने बताया कि सामान्य तौर पर एककिलो धान में लगभग 5 हजार लीटर पानी की जरूरत होती है, वहीं ऐरोबिक चावल में दो से ढाई हजार लीटर पानी काउपयोग होता है। इसके उपयोग से उर्वरक, कीटनाशकों, श्रम लागत व ग्रीन हाउस गैस के उत्सर्जन की मात्रा को कम कर देता है। इसे पर्यावरण हितैषी माना गया है। इस मौके पर कृषि अधिकारी धनराज मीना, सहायक कृषि अधिकारी शिवराज मीना, महावीर प्रसाद भी मौजूद थे। किसान क्रॉफ्ट के जेडएसएम संतोष जायसवाल, शिव शर्मा, एग्रोनॉमी राहुल कुमार तथा जतीन शर्मा ने बताया कि छोटे और सीमान्त किसानों की जरूरतों के अनुरूप कृषि, मशीनरी एवं उपकरण के साथ बीजों के विकास के कारोबार में भी कदम रखते हुए ऐरोबिक किस्मों का विकास कर सफल परीक्षण के बाद दूसरे अनाजों की भी ऐरोबिक किस्म को विकसित करनेकी दिशा में काम किया है।

2. Dainik Bhaskar

दैनिक भास्कर

बारां 22-10-2020

सीधी बुवाई वाले धान की खेती में होती है पानी की बचत, किसानों को मिलता है लाभ : शर्मा

डीएसआर धान के फायदे पर किसानों को शिक्षित करने का लक्ष्य

बारां. शहर के मांगरोल रोड पर बुधवार को बैंगलोर की किसान क्रॉफ्ट लि. की संस्था के अधिकारियों की मौजूदगी में एक किसान के खेत में किसानों के लिए डीएसआर धान, सीधी बुवाई का प्रदर्षन कर कार्यशाला का आयोजन किया।

कार्यक्रम में कृषि विभाग के उपनिदेशक अतिश कुमार शर्मा ने बताया कि जिले में अब किसान सीधी बुवाई की फसल की खेती कर पानी की बचत करके कम लागत में भी फायदा उठा सकेगा। यह संभव होगा सीधी बुवाई की खेती से। इससे किसान 50 फीसदी कम पानी का उपयोग कर सकते हैं।

इसके अलावा सीधी बुवाई को गेहूं, सोयाबीन की तरह सीधे बोया जा सकता है। जिले में मौसम व पानी की कमी से नई तकनीक को देखते हुए सीधी बुवाई करेंगे तो किसानों को फायदा होगा। उन्होंने

बारां. किसानों को धान संबंधी जानकारी दी गई।

गुणवत्ता वाले ऐरोबिक (सीधी बुवाई) चावल कृषि के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

उन्होंने बताया कि सामान्य तौर पर एक किलो धान में लगभग 5 हजार लीटर पानी की जरूरत होती है। वहीं ऐरोबिक चावल में दो-ढ़ाई हजार लीटर पानी का उपयोग होता है, साथ ही इसके उपयोग से उर्वरक, कीटनाशकों, श्रम लागत व ग्रीन हाउस गैस के उत्सर्जन की मात्रा को कम कर देता है। इसे पर्यावरण हितैषी माना गया है। कृषि विभाग ने भी इसे प्रमाणित करते हुए अधिकाधिक इसी पद्धति से किसानों को बुवाई करने के लिए प्रेरित कर रहे हैं।

कार्यक्रम का उद्देश्य सीधी बुवाई उगाने की प्रक्रिया पर किसानों को शिक्षित करना है। कार्यक्रम में कृषि अधिकारी धनराज मीना, सहायक कृषि अधिकारी शिवराज मीना, महावीर प्रसाद, दुष्यंत डीपीओ भी मौजूद रहे।

3. Baran Patrika

सीधी बुवाई वाले धान की खेती में पानी की बचत, किसानों को कई लाभ-शर्मा

डीएसआर धान के फायदे पर किसानों को शिक्षित करने का लक्ष्य

बारां 21 अक्टूबर। राजस्थान के बारां जिले में अब किसान सीधी बुवाई की फसल की खेती कर पानी की बचत करके कम लागत में भी फायदा उठा सकेगा। यह संभव होगा सीधी बुवाई की खेती से। इससे किसान 50 फीसदी कम पानी का उपयोग कर सकते हैं। इसके अलावा सीधी बुवाई को गेहूँ, सोयाबीन की तरह सीधे बोया जा सकता है। जैसे कहा जाता है कि यदि मौसम और पानी हो तो जमीन भी सोना उगलती है। मौसम व पानी की कमी से नई तकनीक को देखते हुए सीधी बुवाई करेंगे तो किसानों को फायदा होगा।

यह विचार कृषि उप निदेशक अतीश कुमार शर्मा ने बुधवार को बैंगलोर की किसान क्राफ्ट लि. ी संस्था के अधिकारियों की मौजूदगी में बारां-मांगरोल रोड पर स्थित एक किसान जयनारायण हल्दिया के खेत में किसानों के लिए डीएसआर धान, सीधी बुवाई का प्रदर्शन कर कार्यशाला के आयोजन में व्यक्त किये। उन्होंने पत्रकारों को गुणवत्ता वाले ऐरोबिक (सीधी बुवाई) चावल कृषि के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि सामान्य तौर पर एक किलो धान में लगभग 5 हजार लीटर पानी की जरूरत होती है वहीं ऐरोबिक चावल में दो-ढाई हजार लीटर पानी का उपयोग होता है साथ ही इसके उपयोग से उर्वरक, कीटनाशकों, श्रम लागत व ग्रीन हाउस गैस के उत्सर्जन की मात्रा को कम कर देता है। इसे पर्यावरण हितैषी

माना गया है। कृषि विभाग ने भी इसे प्रमाणित करते हुए अधिकाधिक इसी पद्धति से किसानों को बुवाई करने हेतु प्रेरित कर रहे हैं। कार्यक्रम का उद्देश्य सीधी बुवाई उगाने की प्रक्रिया पर किसानों को शिक्षित करना है। कार्यक्रम में कृषि अधिकारी धनराज मीणा, सहायक कृषि अधिकारी शिवराज मीणा, महावीर प्रसाद, दुष्यन्त डीपीओ भी मौजूद थे जिनका कम्पनी प्रतिनिधियों ने माल्यार्पण कर स्वागत किया।

किसान क्राफ्ट लि. के जेडएसएम संतोष जायसवाल, सेल्स मैनेजर शिव शर्मा, एग्रोनॉमी राहुल कुमार तथा जतीन शर्मा ने बताया कि छोटे और सीमान्त किसानों की जरूरतों के अनुरूप कृषि, मशीनरी एवं उपकरण बनाने वाली कम्पनी किसान क्राफ्ट लि., बैंगलोर ने बीजों के विकास के कारोबार में भी कदम रखते हुए ऐरोबिक किस्मों का विकास कर सफल परीक्षण के बाद दूसरे अनाजों की भी ऐरोबिक किस्म को विकसित करने की दिशा में काम किया है।

राहुल ने कहा कि भारत की अर्थव्यवस्था में धान की खेती और उत्पादन का बहुत बड़ा योगदान है। विभिन्न समस्याओं और मुद्दों जैसे कि पानी और श्रम की कमी इस फसल के उत्पादन पर गम्भीर प्रभाव डाल सकती है जो हमारी अर्थव्यवस्था के विकास को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकती है। धान की फसल के खिलाफ बढ़ते मुद्दों का मुकाबला करने के लिए हमने किसान क्राफ्ट में डीएसआर धान का एक नये किस्म को विकसित किया है जो समान उत्पादन के साथ 50 प्रतिशत कम पानी की खपत करता है।

संतोष जायसवाल ने कहा कि डीएसआर धान के उपयोग से किसान पारम्परिक धान के बराबर उपज प्राप्त कर सकते हैं। पारम्परिक धान की किस्मों की तुलना में स्वाद में कोई बदलाव किये बिना, इस धान को सीधे बोया जा सकता है जिससे धान की खेती में लाभप्रदता बढ़ जाती है क्योंकि यह खेती के खर्चों में काफी कमी लाता है।

किसान क्राफ्ट एक आईएसओ 9001:2015 प्रमाणित निर्माता, थोक, आयातक और उच्च गुणवत्ता वाले कृषि उपकरण का वितरक है जो अपनी आय, फसल की पैदावार और खेती वाले क्षेत्रों को बढ़ाने में मदद करके छोटे किसानों के साथ सीमान्त किसानों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार करता है। थोड़े ही समय में किसान क्राफ्ट इस सेगमेंट में देशभर में सबसे प्रतिष्ठित और विश्वसनीय कम्पनियों में से एक बन गया है। किसान क्राफ्ट का एक अखिल भारतीय वितरण नेटवर्क है जिसमें देशभर के 3000 डीलर, 16 कार्यालय और 14 सेवा केन्द्र शामिल है।

कोरोना वायरस संक्रमित क्षेत्रों में लगाया कर्फ्यू

गीता मीणा

झालावाड़ 21 अक्टूबर। नगर परिषद् क्षेत्र झालावाड़ में कंचन सिटी में मकान नम्बर ए-8 नरेन्द्र कुमार दुबे के मकान का क्षेत्र तथा आशेन विहार कॉलोनी में आशियाना भवन के पास सुशील कुमार तिवारी के मकान 54-बी के क्षेत्र में नोवल कोरोना वायरस से संक्रमित व्यक्ति चिन्हित होने एवं संक्रमण फैलने की संभावनाओं के मद्देनजर नागरिकों के स्वास्थ्य की सुरक्षा एवं लोक परिशान्ति बनाए रखने की दृष्टि से दण्ड प्रक्रिया संहिता 1973 की धारा 144 के तहत उपखण्ड मजिस्ट्रेट झालावाड़ मुहम्मद जुनैद द्वारा 20 अक्टूबर दोपहर 12 बजे से 09 नवम्बर, 2020 रात्रि 12 बजे तक के लिए निषेधाज्ञा जारी की गई है।

युवाओं को आगे बढ़ने का अवसर प्रदान करें - जिला कलक्टर

4. Divya Aadhar

सीधी बुवाई वाले धान की खेती में पानी की बचत, किसानों को कई लाभ-शर्मा

डीएसआर धान के फायदे पर किसानों को शिक्षित करने का लक्ष्य

दिव्य आधार. बारां। राजस्थान के बारां जिले में अब किसान सीधी बुवाई की फसल की खेती कर पानी की बचत करके कम लागत में भी फायदा उठा सकेगा। यह संभव होगा सीधी बुवाई की खेती से। इससे किसान 50 फीसदी कम पानी का उपयोग कर सकते हैं। इसके अलावा सीधी बुवाई को गेहूँ, सोयाबीन की तरह सीधे बोया जा सकता है। जैसे कहा जाता है कि यदि मौसम और पानी हो तो जमीन भी सोना उगलती है। मौसम व पानी की कमी से नई तकनीक को देखते हुए सीधी बुवाई करेंगे तो किसानों को फायदा होगा। यह विचार कृषि उप निदेशक अतीश कुमार शर्मा ने बुधवार को बैंगलोर की किसान क्राफ्ट लि. की संस्था के अधिकारियों की मौजूदगी में बारां-मांगरोल रोड पर स्थित एक किसान जयनारायण हल्दिया के खेत में किसानों के लिए डीएसआर धान, सीधी बुवाई का प्रदर्शन कर कार्यशाला के आयोजन में व्यक्त किये। उन्होंने पत्रकारों को गुणवत्ता वाले ऐरोबिक (सीधी बुवाई) चावल कृषि के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि सामान्य तौर पर एक किलो धान में लगभग 5 हजार लीटर पानी की जरूरत होती है वहीं ऐरोबिक चावल में दो-ढाई हजार लीटर पानी का उपयोग होता है साथ ही इसके उपयोग से उर्वरक, कीटनाशकों, श्रम लागत व ग्रीन हाउस गैस के उत्सर्जन की मात्रा को कम कर देता है। इसे पर्यावरण हितैषी माना गया है। कृषि विभाग ने भी इसे प्रमाणित करते हुए अधिकाधिक इसी पद्धति से किसानों को बुवाई करने हेतु प्रेरित कर रहे हैं। कार्यक्रम का उद्देश्य सीधी बुवाई उगाने की प्रक्रिया पर किसानों को शिक्षित करना है। कार्यक्रम में कृषि अधिकारी धनराज मीणा, सहायक कृषि अधिकारी शिवराज मीणा, महावीर प्रसाद, दुष्यन्त डीपीओ भी मौजूद थे जिनका कम्पनी प्रतिनिधियों ने माल्यार्पण कर स्वागत किया। किसान क्राफ्ट लि. के जेडएसएम संतोष जायसवाल, सेल्स मैनेजर शिव शर्मा, एग्रोनॉमी राहुल कुमार तथा जतीन शर्मा ने बताया कि छोटे और सीमान्त किसानों की जरूरतों के अनुरूप कृषि, मशीनरी एवं उपकरण बनाने वाली कम्पनी किसान क्राफ्ट लि., बैंगलोर ने बीजों के विकास के कारोबार में भी कदम रखते हुए ऐरोबिक किस्मों का विकास कर सफल परीक्षण के बाद दूसरे अनाजों की भी ऐरोबिक किस्म को विकसित करने की दिशा में काम किया है।

5. Dainik Adhunik Rajasthan

समन्वय प्रकाश, आरओ एआरओ अधिकारी उपस्थित थे। सफल को मेडिकल कॉलेज अजमेर भेजा गया है।

सीधी बुवाई वाले धान की खेती में पानी की बचत, किसानों को कई लाभ-शर्मा

डीएसआर धान के फायदे पर किसानों को शिक्षित करने का लक्ष्य

अमित जैन, बारां। राजस्थान के बारां जिले में अब किसान सीधी बुवाई की फसल की खेती कर पानी की बचत करके कम लागत में भी फायदा उठा सकेगा। यह संभव होगा सीधी बुवाई की खेती से। इससे किसान 50 फीसदी कम पानी का उपयोग कर सकते हैं। इसके अलावा सीधी बुवाई को गेहूँ, सोयाबीन की तरह सीधे बोया जा सकता है। वैसे कहा जाता है कि यदि मौसम और पानी हो तो जमीन भी सोना उगलती है। मौसम व पानी की कमी से नई तकनीक को देखते हुए सीधी बुवाई करेंगे तो किसानों को फायदा होगा।

यह विचार कृषि उप निदेशक अति कुमार शर्मा ने बुधवार को बैंगलोर की किसान क्रॉफ्ट लि. की संस्था के अधिकारियों की मौजूदगी में बारां-मांगरोल रोड पर स्थित एक किसान जयनारायण हल्दिया के खेत में किसानों के लिए डीएसआर धान, सीधी बुवाई का प्रर्दान कर कार्याला के आयोजन में व्यक्त किये। उन्होंने पत्रकारों को गुणवत्ता वाले ऐरोबिक (सीधी बुवाई) चावल कृषि के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि सामान्य तौर पर एक किलो धान में लगभग 5 हजार लीटर पानी की जरूरत होती है वहीं ऐरोबिक चावल में दो-ढ़ाई हजार लीटर पानी का उपयोग होता है साथ ही इसके उपयोग से उर्वरक, कीटनाशकों, श्रम लागत व ग्रीन हाउस गैस के उत्सर्जन की मात्रा को कम कर देता है। इसे पर्यावरण हितैषी माना गया है। कृषि विभाग ने भी इसे प्रमाणित करते हुए अधिकाधिक इसी पद्धति से किसानों को बुवाई करने हेतु प्रेरित कर रहे हैं। कार्यक्रम का उद्देय सीधी बुवाई उगाने की प्रक्रिया पर किसानों को शिक्षित करना है। कार्यक्रम में कृषि अधिकारी धनराज मीना, सहायक कृषि अधिकारी शिवराज मीना, महावीर प्रसाद, दुष्यन्त डीपीओ भी मौजूद थे जिनका कम्पनी प्रतिनिधियों ने माल्यार्पण कर स्वागत किया। किसान क्रॉफ्ट लि. के जेडएसएम संतोष जायसवाल, सेल्स मैनेजर शिव शर्मा, एग्रोनॉमी राहुल कुमार तथा जतीन शर्मा ने बताया कि छोटे और सीमान्त किसानों की जरूरतों के अनुरूप कृषि, मशीनरी एवं उपकरण बनाने वाली कम्पनी किसान क्रॉफ्ट लि., बैंगलोर ने बीजों के विकास के कारोबार में भी कदम रखते हुए ऐरोबिक किस्मों का विकास कर सफल परीक्षण के बाद दूसरे अनाजों की भी ऐरोबिक किस्म को विकसित करने की दिशा में काम किया है।

6. Disha dhwaj

दिशाध्वज

सीधी बुवाई वाले धान की खेती में पानी की बचत, किसानों को कई लाभ-शर्मा

डीएसआर धान के फायदे पर किसानों को शिक्षित करने का लक्ष्य

चार लडको की आवश्यकता है

बारां शहर में अखबार वितरण करने हेतु स्वयं की साईकिल वाले चार लडको की आवश्यकता है।

इच्छुक सम्पर्क करे:-

शर्मा न्यूज एजेन्सी स्टेशन रोड बारां

मो. 9468631471, 9414190429

गाड़ी बुकिंग के लिये सम्पर्क करें

टवेरा गाड़ी मय फुल पावर डबल एस.सी. सहित बुकिंग के लिये सम्पर्क करे है।

मो. 9462010722, 9468631471

आवश्यकता है

मार्केटिंग के लिये 2 अनुभवी व्यक्तियों की अतिशीघ्र आवश्यकता है। केवल अनुभवी व्यक्ति ही सम्पर्क करें।

वेतन योग्यतानुसार दिया जायेगा।

सम्पर्क करें:- 9828309666, 9119201009

7. Baran NavaJyothi

बारां नवज्योति

4 गुरुवार कोटा, 22 अक्टूबर, 2020

10 भीतर पेज खास | होटल को बनाया क्वारंटाइन सेंटर... | खास खास खबर

डीएसआर धान के फायदे पर किसानों को शिक्षित करने का लक्ष्य

सीधी बुवाई वाले धान की खेती में पानी की बचत, किसानों को कई लाभ

बारां। धान की खेती के बारे में जानकारी देते हुए।

8. UNIVARTA

http://www.univarta.com/news/rajsthan/story/2208042.html#.X5kE_emeI7Q.whatsapp

भारत | दुनिया | खेल | बिजनेस | विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी | फीचर्स | मनोरंजन | राज्य | चुनाव | लोकरुचि | आज का इतिहास

राज्य »

राजस्थान

Posted at: Oct 21 2020 5:35PM

सीधी बुवाई वाले धान की खेती में पानी की बचत

बारां 21 अक्टूबर (वार्ता) राजस्थान में बारां जिले में अब किसान सीधी बुवाई की फसल की खेती करके पानी की बचत करके कम लागत में भी फायदा उठा सकेगा।

यह संभव होगा ऐरोबिक धान की सीधी बुवाई की खेती से। इससे किसान 50 फीसदी कम पानी का उपयोग कर सकते हैं। इसके अलावा सीधी बुवाई को गेहूँ, सोयाबीन की तरह सीधे बोया जा सकता है। वैसे कहा जाता है कि यदि मौसम सही और पर्याप्त पानी हो तो जमीन भी सोना उगलती है। मौसम व पानी की कमी से नई तकनीक को देखते हुए सीधी बुवाई करेंगे तो किसानों को फायदा होगा।

यह विचार कृषि उप निदेशक अतीश कुमार शर्मा ने बुधवार को बैंगलोर की किसान क्रॉफ्ट लि. की संस्था के अधिकारियों की मौजूदगी में बारां-मांगरोल रोड पर स्थित एक किसान जयनारायण हल्दिया के खेत में किसानों के लिए डीएसआर धान, सीधी बुवाई का प्रदर्शन कर कार्यशाला के आयोजन में व्यक्त किये। उन्होंने पत्रकारों को गुणवत्ता वाले ऐरोबिक, सीधी बुवाई चावल कृषि के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

उन्होंने बताया कि सामान्य तौर पर एक किलो धान में लगभग पांच हजार लीटर पानी की जरूरत होती है। वहीं ऐरोबिक चावल में दो-ढाई हजार लीटर पानी का उपयोग होता है। साथ ही इसके उपयोग से उर्वरक, कीटनाशकों, श्रम, लागत और ग्रीन हाउस गैस के उत्सर्जन की मात्रा कम होती है। इसे पर्यावरण हितैषी माना गया है। कृषि विभाग ने भी इसे प्रमाणित करते हुए अधिकाधिक इसी पद्धति से किसानों को बुवाई करने हेतु प्रेरित कर रहे हैं।

शाह सुनील
वार्ता

9. Rajasthan Patrika Bureau

सीधी बुवाई वाले धान की खेती में पानी की बचत, किसानों को लाभ : शर्मा

कार्यशाला का आयोजन

बारां 21 अक्टूबर।

10. News Flash Video Clip (TV Channel)

Chhatarpur District Madhya Pradesh (19/10/20)

1. **Youtube link https://youtu.be/iP3HewOvJH8**
2. **Blog: Jee news janhitarth environment exclusive**
   Post: पानी की बचत करने वाला धान,50% श्रम और पानी की बचत,किसानों को दी जानकारी,कृषि वैज्ञानिक एवं निर्देशक रहे मार्गदर्शक.
   Link: https://jeenewslive.blogspot.com/2020/10/50.html

3. **Bhopal Ki Jaan**

किसान क्राफ्ट ने छतरपुर में किसानों के लिए डायरेक्ट सीडेड राइस धान का प्रदर्शन किया

छतरपुर। किसान क्राफ्ट एक आईएसओ 9001:2015 प्रमाणित निर्माता थोक आयातक और उच्च गुणवत्ता वाले कृषि उपकरण के वितर हैं। किसान क्राफ्ट ने छतरपुर चौबे कॉलोनी में किसानों के लिए एक डीएसआर धान का प्रदर्शन किया। प्रदर्शन का आयोजन राहुल मैनेजर एग्रोनॉमी और संतोष जायसवाल जीएम सेल्स ने किया ताकि किसानों को प्रत्यक्ष रूप से धान की खेती की प्रक्रियाओं के बारे में शिक्षित किया जा सके। डीएसआर धान के फायदे यह हैं कि डीएसआर धान की खेती के लिए पारंपरिक धान पानी तुलना में 50 प्रतिशत कम पानी का उपयोग होता है और उर्वरक, कीटनाशक, श्रम लागत और ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन की मात्रा को भी कम कर देता है एक किसाना पारंपरिक धान का उत्पादन करने के लिए 5000 लीटर पानी की आवश्यकता होती है लेकिन डीएसआर धान के लिए 2000 लीटर की आवश्यकता होती है यह फसल कम वर्षा वाले क्षेत्रों में भी उगाई जा सकती है। डीएसआर धान अच्छी तरह से वातित खेतों में उगाया जा सकता है खेतों कोपोखर कीचड़ की जरूरत नही है दालों सब्जियों और तिलहन के साथ इंटर या मिश्रित फसल भी संभव है।लंबे समय में यह मिट्टी के स्वास्थ्य सुधार करता है। प्रदर्शन पर बोलते हुए राहुल ने कहा भारत की अर्थव्यवस्था में धान की खेती और उत्पादन बहुत बड़ा योगदान है विभिन्न समस्याओं और मुद्दों जैसे कि पानी और ज्ञान की कमी इस फसल के उत्पादन पर गंभीर प्रभाव डाल सकती है, जो हमारी अर्थव्यवस्था के विकास को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकती है। धान की फसल के खिलाफ बढ़ते मुद्दों का मुकाबला करने के लिए हमने किसानक्राफ्ट में डीएसआर धान का एक नया किस्म को विकसित किया है जो समान उत्पादन के साथ 50 प्रतिशत कम पानी की खपत करता है। संतोष जायसवाल कहा डीएसआर धान के उपयोग में किसान पारंपरिक धान के बराबर उपज प्राप्त कर सकते हैं पारंपरिक धान की किस्म कि तुलना में स्वाद में कोई बदलाव किए बिना इस धान को सीधे बोया जा सकता है जिससे धान की खेती में लाभप्रदता बढ़ जाती है क्योंकि यह खेती के खर्चों में काफी कमी लाता है। डीएसआर धान की खेती का एक महत्वपूर्ण लाभ यह है कि इसे नर्सरी, पोखर, लेवलिंग और रोपाई की आवश्यकता नहीं है यह बहुत इको फ्रेंडली पर्यावरण के अनुकूल भी है क्योंकि यह लागत प्रभावी फलस होने के साथ साथ कम मीथेन उत्सर्जन करता है यह कीटों और बीमारियों की घटना को भी कम कर देता है।

Raigarh District Chhattigarh (17/10/20)

1. Hari bhoomi

अक्टूबर 2020 रायगढ़ हरिभूमि 16

एरोबिक पद्धति से धान लगाने किसानों को मिल रहा उन्नत कृषि का प्रशिक्षण

हरिभूमि न्यूज ⏭ कुड़ेकेला

जिले का धरमजयगढ़ ब्लॉक के गांव पुरुंगा में संजय गुप्ता द्वारा बीते वर्ष खर्रा ग्राम में संजय अग्रवाल के 30 एकड़ में लगे फसल को देखकर वे बहुत ज्यादा प्रभावित हुए फिर उन्होंने अपने खेत में भी वही धान की फसल एरोबिक पद्धति से लगाया जिसके बाद अच्छी फसल को देखते हुए और बाकी किसान भाइयों को इसके बारे में बताने के लिए आज धान प्रदर्शन का संचालन किया गया। इस प्रदर्शन का संचालक सुधांशु द्वारा किया गया इसका उद्देश्य एरोबिक धान लगाने की प्रक्रिया पर किसानों को शिक्षित करना था।

एरोबिक धान का फायदा यह है कि धान की खेती के लिए जितनी पानी की जरूरत है उसके मुकाबले यह 50 प्रतिशत कम पानी का इस्तेमाल करता है और साथ ही उर्वरक कीटनाशक मजदूर की लागत और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को भी कम करता है। 1 किलो पारंपरिक चावल उगाने के लिए आमतौर पर लगभग 5 लीटर पानी की जरूरत होती है, लेकिन एरोबिक धान को उगाने के लिए 2000 या 2500 लीटर पानी की आवश्यकता पड़ती है। इस फसल को उन क्षेत्रों में उगाया जा सकता है जहां बारिश कम होती है। एरोबिक धान को अच्छी तरह से वाष्पीय क्षेत्रों में सीधी सूखा ही बोया जा सकता है खेतों को गिला करने की जरूरत नहीं पड़ती फसल को दोनों सब्जियों और आयल सेट के साथ में लाना या शामिल करना भी संभव होता है। लंबे समय तक इसका इस्तेमाल करने से मिट्टी की सेहत भी अच्छी होती है। प्रदर्शन के बारे में बताते हुए सुधांशु ने कहा धान की खेती और उत्पादन का भारत की अर्थव्यवस्था में बहुत बड़ा योगदान है पानी की कमी और ज्ञान के अभाव जैसे विभिन्न समस्याओं और मुद्दों का इस फसल के उत्पादन पर गहरा प्रभाव पड़ता है जोकि हमारी अर्थव्यवस्था की विधि को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। चावल खेती के संबंध में बढ़ते मुद्दों से निपटने के लिए किसानक्राफ्ट ने एरोबिक धान की नई धारा विकसित की है जो समान उत्पादन के साथ 50 परसेंट कम पानी का इस्तेमाल करती है एरोबिक धान के इस्तेमाल पर किसान प्रति हेक्टेयर की उर्वरक क्षमता के आधार पर लगभग 55 क्विंटल धान की पैदावार कर सकते हैं। चावल की पारंपरिक किस्मों की तुलना में स्वाद में किसी बदलाव के बिना इस धान को सीधा बोया जा सकता है, जिससे धान की पैदावार का लाभ भी बढ़ता है। और पैदावार का खर्च भी कम होता है। एरोबिक धान का एक महत्वपूर्ण लाभ यह है कि इसके लिए नर्सरी, कुआं, समतलन और प्रत्यारोपण की जरूरत नहीं होती यह बेहद पर्यावरण हितैषी भी है क्योंकि यह मिथेन का कम उत्सर्जन करता है। और साथ ही लागत प्रभावी पैदावार प्रदान करता है। यह कीट और रोगों की घटनाओं को भी कम करता है किसानक्राफ्ट उच्च गुणवत्ता युक्त कृषि उपकरण की आइएसओ 9001:2015 प्रमाणित निर्माता और वितरक है इसके द्वारा किसानों की आमदनी एवं उत्पादन क्षेत्रों को बढ़ाने में मदद कर छोटे खेत वाले सीमा सीमांत किसानों की जिंदगी को बेहतर बनाने पर ध्यान केंद्रित किया जा रहा है।

50 फीसदी पानी की खपत करता है कम

गढ़ में गौठान निर्माण का रास्ता साफ

होम आइसोलेशन के नियमों

2. Nava Bharat

धान-प्रदर्शन के साथ उसके फायदे के बारे में किसानों को दी गई जानकारी

नवभारत रिपोर्टर | कुड़ेकेला.
www.navbharat.org

किसान क्राफ्ट में धरमजयगढ़ ब्लाक के ग्राम पुरुगा में किसानों के लिए एक डी इस आर धान का प्रदर्शन किया. जिसका आयोजन सुधांशु मिश्रा जीएम सेल ने किया ताकि किसानों को प्रत्यक्ष रूप से धान की खेती की प्रक्रियाओं के बारे में शिक्षित किया जा सके. इसके फायदे ये हैं कि धान की खेती के लिए पारम्परिक धान पानी की तुलना में 50 फीसदी कम पानी का उपयोग होता है और उर्वरक कीटनाशक कम लागत ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन की मात्रा को भी कम कर देता है.'

एक किलो पारम्परिक धान के उत्पादन हेतु 5 हजार लीटर पानी की आवश्यकता होती है. जबकि इस योजना में 2 से ढाई हजार लीटर पानी - उत्पादन हेतु पर्याप्त है. अतः ये फसल कम वर्षा वाले क्षेत्रों में उगाई जा सकती है. यह धान अच्छी तरह से वापित खेतों में उगाया जा सकता है.

छत्तीसगढ़ में विद्यमान परिस्थितियां और जलवायु दोनों को दृष्टिगत रखते हुए इस धान की खेती किसानों के लिए निश्चित रूप से लाभदायक सिद्ध हो सकती है और इसके माध्यम से कृषि को एक लाभदायक रोजगारपरक व्यवसाय के रूप में स्थापित करना सम्भव है.

पारम्परिक धान की किस्मों की तुलना में स्वाद में कोई बदलाव कोई बिना इसे सीधे बोया जा सकता है जिससे अन्य कृषि व्ययों में भी कमी आती है. ऐसी जानकारी सुधांशु मिश्रा के द्वारा दी गई. इस अवसर पर क्षेत्र के किसान, कृषि विभाग धरमजयगढ़ के अधिकारी, कर्मचारी और ग्रामीण जन, सोसल डिस्टेंसिंग के पालन के साथ मौजूद थे.

प्रदर्शन के दौरान मौजूद किसानों को जानकारी देते अधिकारी.

रंगोली व चित्रकला से दिया कोरोना से बचाव का संदेश, डॉक्टर व पुलिस कर्मियों का सम्मान

3. NTV Times

WhatsApp Video
2020-10-19 at 8.16.1

4. (News paper name not found)

प्रशिक्षित टीम ने दिया किसानों को उन्नत कृषि का प्रशिक्षण

नावापारा। उच्च गुणवत्ता कृषि उपकरण की एक आइएसओ 9001:2015 प्रमाणित निर्माता थोक आयातक और वितरक कंपनी किसान क्राफ्ट धर्मजयगढ़ ब्लॉक के गांव पुरूंगा में संजय गुप्ता बीते वर्ष खरां ग्राम में संजय अग्रवाल के 30 एकड़ में लगे फसल को देखकर वे बहुत ज्यादा प्रभावित हुए। फिर उन्होंने अपने खेत में भी वही धान की फसल एरोबिक पद्धति से लगाया जिसके बाद अच्छी फसल को देखते हुए और बाकी किसान भाईयों को इसके बारे में बताने के लिए आज धान प्रदर्शन का संचालन किया। इस प्रदर्शन का संचालक सुधांशु मिश्रा ने किया। इसका उद्देश्य एरोबिक धान लगाने की प्रक्रिया पर किसानों को शिक्षित करना था।

एरोबिक धान का फायदा यह है कि धान की खेती के लिए जितनी पानी की जरूरत है, उसके मुकाबले यह 50 प्रतिशत कम पानी का इस्तेमाल करता है और साथ ही उर्वरक कीटनाशक मजदूर की लागत और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को भी कम करता है। 1 किलो पारंपरिक चावल उगाने के लिए आम तौर पर लगभग 5 लीटर पानी की जरूरत होती है, लेकिन एरोबिक धान को उगाने के लिए 2000 या 2500 लीटर पानी की आवश्यकता पड़ती है। इस फसल को उन क्षेत्रों में उगाया जा सकता है जहां बारिश कम होती है। एरोबिक धान को अच्छी तरह से वाष्पीय क्षेत्रों में सीधी सूखा ही बोया जा सकता है। खेतों को गिला करने की जरूरत नहीं पड़ती, फसल को दोनों सब्जियों और आयल सेट के साथ में लाना या शामिल करना भी संभव होता है। लंबे समय तक इसका इस्तेमाल करने से मिट्टी की सेहत भी अच्छी होती है। प्रदर्शन के बारे में बताते हुए सुधांशु मिश्रा ने कहा धान की खेती और उत्पादन का भारत की अर्थव्यवस्था में बहुत बड़ा योगदान है। पानी की कमी और ज्ञान के अभाव जैसे विभिन्न समस्याओं और मुद्दों का इस फसल के उत्पादन पर गहरा प्रभाव पड़ता है जो कि हमारी अर्थव्यवस्था की विधि को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।

धान की खेती के संबंध में बढ़ते मुद्दों से निपटने के लिए किसान क्राफ्ट में एरोबिक धान की नई धारा विकसित की है जो समान उत्पादन के साथ 50 प्रतिशत कम पानी का इस्तेमाल करती है। एरोबिक धान के इस्तेमाल पर किसान प्रति हेक्टेयर की उर्वरक क्षमता के आधार पर लगभग 55 क्विंटल धान की पैदावार कर सकते हैं। चावल की पारंपरिक किस्मों की तुलना में स्वाद में किसी बदलाव के बिना इस धान को सीधा बोया जा सकता है, जिससे धान की पैदावार का लाभ भी बढ़ता है और पैदावार का खर्च भी कम होता है। एरोबिक धान का एक महत्वपूर्ण लाभ यह है कि इसके लिए नर्सरी, जुताई, समतलन और प्रत्यारोपण की जरूरत नहीं होती। यह बेहद पर्यावरण हितैषी भी है क्योंकि यह मिथेन का कम उत्सर्जन करता है और साथ ही लागत प्रभावी पैदावार प्रदान करता है। यह कीट और रोगों की घटनाओं को भी कम करता है। किसान क्राफ्ट उच्च गुणवत्ता युक्त कृषि उपकरण की आईएसओ 9001:2015 प्रमाणित निर्माता और वितरक है। इसके द्वारा किसानों की आमदनी एवं उत्पादन क्षेत्रों को बढ़ाने में मदद कर छोटे खेतों वाले सीमा सीमांत किसानों की जिंदगी को बेहतर बनाने पर ध्यान केंद्रित किया जा रहा है।

किसान क्राफ्ट में बेहद कम समय में इस क्षेत्र में राष्ट्रव्यापी उपस्थिति के साथ एक सबसे प्रतिष्ठित एवं भरोसेमंद कंपनी का दर्जा प्राप्त किया है। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से सुरेंद्र सिंह पटेल (सीनियर एग्रीकल्चर डेवलपमेंट ऑफिसर) धरमजयगढ़, के. आर. पैकरा धरमजयगढ़, के. के. पैकरा धरमजयगढ़, दिनेश चौधरी पुरूंगा, साथ ही किसान क्राफ्ट से अरविंद राठौर, प्रियांशु राठौर व आसपास के क्षेत्रीय किसान बंधु सम्मिलत थे।

आवश्यकता है

मैरिज ब्यूरो में टेलीकॉलिंग एवं कम्प्यूटर ऑपरेटर कार्य हेतु युवती व महिलाओं की आवश्यकता है। योग्यता आठवीं से ग्रेजुएट वेतन योग्यतानुसार।

मो. नं. 9669093756
7089033453